Class -12 Subject: hindiपीयुष प्रवाह) Topic-ch.1(उसने

प्रश्न/उत्तर करो।

प्रश्न 1.

पलटने का विदूषक किसे माना जाता था?

उत्तर:

विदूषक का शाब्दिक अर्थ है 'मसखरा' अर्थात् पलटन में जो सबको हँसाए, सबका मनोरंजन करे तथा सिपाहियों की उदासीनता और थकान दूर करे। कहानी में बजीरासिंह विदूषक है। उसने अपने आपको 'पाधा' कहकर सबको प्रसन्न कर दिया।

प्रश्न 2.

"कयामत आई है और लपटन साहब की वर्दी पहनकर आई है।" यह कथन किसने, किससे और क्यों कहा?

उत्तर:

यह कथने लहनासिंह ने बजीरासिंह से कहा। जर्मन ने सूबेदार को धोखा देकर दूर भेज दिया। ताकि वह खन्दक पर आक्रमण करके उस पर अधिकार कर ले। लहनासिंह बजीरासिंह को वास्तविकता से अवगत करना चाहता था और सूबेदार को वापिस बुलाना चाहता था।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 3.

सूबेदारनी के चरित्र की दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर:

(क) सरल और सहज स्वभाव।

(ख) मातृत्व का भाव और सच्ची पत्नी

प्रश्न 4.

'उसने कहा था' कहानी की पृष्ठभूमि में किस युद्ध का वातावरण चित्रित है?

उत्तर:

'उसने कहा था' कहानी, प्रथम विश्वयुद्ध जो 1914 ई. से 1918 ई. में इंग्लैण्ड और जर्मनी के बीच हुआ था, की पृष्ठभूमि पर आधारित है। युद्धकालीन चित्रण सजीव है। युद्ध क्षेत्र में सैनिकों को क्या कष्ट सहन करना पड़ता है, उसका यथार्थ वर्णन है।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 1.

उसने कहा था' कहानी के शीर्षक पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर:

शीर्षक कहानी का मूलाधार है। शीर्षक छोटा हो, जिज्ञासात्मक हो, कथानक को अपने में समेटे हुए हो। वही शीर्षक अच्छा माना जाता है। प्रस्तुत कहानी का शीर्षक केवल तीन शब्दों का है पर सबसे बड़ी बात यह है कि यह जिज्ञासात्मक है। अन्त तक पाठक की यह जिज्ञासा रहती है किसने और क्या कहा था। पाठक उस रहस्य को जानने के लिए उत्सुक रहता है। कहानी हाथ से छूटती नहीं है। इससे अच्छा शीर्षक और नहीं हो सकता था। लेखक ने बहुत सोच-समझकर कहानी का यह शीर्षक रखा है।

प्रश्न 2.

'बिना फेरे घोड़ा बिगड़ता है और बिना लड़े सिपाही'-कथन की युक्तियुक्त विवेचना कीजिए।

Scanned with CamScanner

उत्तर:

उपर्युक्त पंक्ति में लेखक की लोकानुभूति छिपी है। घोड़े को घुमाना और संध्या को धूल में लिटाना बहुत आवश्यक है। अगर घोड़े को घुमायें नहीं तो वह अड़ियल हो जाता है और फिर आसानी से ताँगे में चलता नहीं है। यदि उसे संध्या में धूल में लिटाएँ नहीं तो उसकी दिनभर की थकान दूर नहँ होती । इसलिए उसे फिरोना आवश्यक है। इसी प्रकार सिपाही में लड़ने के समय जोश आता है। यदि उसे युद्ध के मैदान में लड़ने का अवसर न मिले तो वह सुस्त और आलसी हो जाता है, उसका जोश समाप्त हो जाता है। लड़ने की बात सुनकर उसका खून उबलने लगता है। इसलिए सिपाही का लड़ना आवश्यक है।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 3.

सूबेदारनी ने स्वप्न में लहनासिंह से क्या कहा? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर:

सूबेदारनी ने स्वप्न में कहा था कि मैंने तुझे पहचान लिया है। एक दिन तैने घोड़े के बिगड़ने पर मेरी रक्षा की थी। मेरा एक ही बेटा है आज वह और पति दोनों लाम पर जा रहे हैं। मेरा दुर्भाग्य है अगर औरतों की पलटन होती तो मैं भी इनके साथ चली जाती। जैसे तैने मेरी रक्षा की थी, उसी प्रकार इनकी भी रक्षा करना। मैं तुझसे इनकी रक्षा की भीख माँगती हूँ। सरकार ने पति को वीरता का खिताब दिया, जमीन दी। आज नमक हलाली का अवसर आया है। इनकी रक्षा करना।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 4.

उसने कहा था' कहानी की मूल संवेदना क्या है?

उत्तर:

कहानी बड़ी मार्मिक है। कहानी की मूल संवेदना निश्छल प्रेम, त्याग और कर्तव्यनिष्ठा है। लहनासिंह बचपन में अंकुरित प्रेम के लिए अपने जीवन का उत्सर्ग करता है और जो वचन दिया था उसके लिए त्याग करता है। दूसरी ओर वह एक सिपाही है जिसका लक्ष्य देश की रक्षा करना है। वह अपने कर्तव्य का निर्वाह करता है। जर्मन अधिकारी को मौत के घाट उतार देता है। शरीर में लगे घावों की चिन्ता छोड़कर शत्रुओं का सामना करता है। वह प्रेम और देश दोनों के लिए त्याग करता है और अपने कर्तव्य का निर्वाह करता है। इस प्रकार लहनासिंह का प्रेम, त्याग और कर्तव्यपरायणता ही कहानी की मूल संवेदना है।

Scanned with CamScanner

कहा था निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1.

यदि आप लहनासिंह के स्थान पर होते तो युद्धभूमि में क्या करते? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर:

प्रत्येक नागरिक के लिए देश और उसकी सुरक्षा अत्यंत आवश्यक होती है। व्यक्तिगत स्वार्थ को छोड़कर देश के लिए जीवन जीना सच्चे नागरिक का कर्तव्य है। लहनासिंह ने भी एक सच्चे सिपाही का उत्तरदायित्व निभाया। ठण्ड में खन्दक में खड़े रहकर भी कष्ट सहता रहा, पीछे नहीं हटा। यदि हम लहनासिंह के स्थान पर होते तो हम भी एक सच्चे सिपाही का कर्तव्य निर्वाह करते। सचेत रहते और शत्रु की प्रत्येक गतिविधि पर ध्यान देते। अपनी चिन्ता न करके शत्रु का सामना करते। साथियों के साथ प्रेम से मिलकर रहते, एक-दूसरे को उत्साहित करते । मन में निराशा और दु:ख का भाव नहीं लाते । सहन शक्ति पैदा करते। ऋतु परिवर्तन एवं

Scanned with CamScanner

उसके प्रभाव से प्रभावित नहीं होते। शत्रु को मुँहतोड़ जबाव देना हमारा लक्ष्य होता । हर पल सावधान रहते। न जाने शत्रु कब धावा बोल दे, इसके लिए सदैव तैयार रहते। देश के लिए मर मिटना हमारा लक्ष्य होता। लहनासिंह की तरह तुरन्त निर्णय लेते।

प्रश्न 2. उसने कहा था' कहानी के नायक लहनासिंह का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर:

लहनासिंह कहानी का नायक है। उसके चरित्र की कतिपय विशेषताएँ निम्नलिखित हैं –

Scanned with CamScanner

प्रत्युत्पन्नमति मान – खन्दक में जर्मन अधिकारी को पहचान लेने के बाद लहनासिंह ने निर्णय लेने में तनिक भी देर नहीं लगाई। वजीरासिंह को जगाकर सूबेदार को लौटा लाने के लिए तुरन्त भेज दिया। तनिक-सी देरी सारी खन्दक को उड़ा देती और सबके प्राण ले लेती। उसने मूर्छित जर्मन अफसर की जेबों की तलाशी लेकर सारे कागज भी निकाल लिए।

कर्तव्यनिष्ठ – लहनासिंह की कर्तव्यनिष्ठा की प्रशंसा की जानी चाहिए। खन्दक में खड़े होकर जहाँ एक ओर वह एक सिपाही के कर्तव्य का निर्वहन कर रहा था वहीं दूसरी ओर बीमार साथी के प्रति भी अपने कर्तव्य का निर्वाह कर रहा था। दो-दो घाव लगने के बाद भी वह अपने कर्तव्य को नहीं भूला । प्रेम के क्षेत्र में भी उसने अपने कर्तव्य का निर्वाह किया। सूबेदारनी को उसने जो वचन दिया था उसे भी उसने परी तरह निभाया।

Scanned with CamScanner

निश्छल-प्रेमी – वह प्रेम के सच्चे अर्थ को समझता था। बचपन में आठ वर्ष की लड़की से दो-तीन बार मिलने पर उसके हृदय में जो प्रेम प्रस्फुटित हुआ था, वह सच्चा प्रेम था। तभी तो सम्भावना के विरुद्ध उत्तर सुनकर उस पर जो प्रभाव पड़ा वह उसके सच्चे प्रेम का उदाहरण है। उसने बचपन के प्रेम को अन्तिम समय तक निभाया। यह सूबेदारनी से किये हुए प्रेम का ही परिणाम था कि उसने बोधासिंह का ध्यान रखा ।।

त्यागी – लहनासिंह के त्याग़ का बहुत अच्छा उदाहरण है- बोधासिंह की रक्षा । खन्दक में ठण्ड होने पर अपना कम्बल, ओवरकोट और जरसी तक बोधासिंह को दे दिया। स्वयं एक कुरते में ही खड़ा रहा। दूसरी ओर उसने अपने प्रेम के लिए अपना जीवन दाँव पर लगा दिया। सूबेदारनी ने जो चाहा था लहनासिंह ने वही किया।

Scanned with CamScanner

साहसी – वह बहुत साहसी था। जर्मन अफसर ने धोखे से सूबेदार को खन्दक से दूर भेज दिया। खन्दक में केवल आठ-दसे सिपाही रह गये। जर्मन सिपाहियों के आक्रमण करने पर उसने अपना साहस नहीं खोया । यद्यपि उसे दो घाव लग गये थे फिर भी वह खड़ा होकर एक-एक जर्मन को मार रहा था। वह सत्तर जर्मन सिपाहियों का साहस के साथ सामना करता रहा। उसके साहस का एक उदाहरण बचपन में भी मिलता है जब एक लड़की को घोड़े की टाँगों के बीच से निकालकर दूर खड़ा कर दिया था और स्वयं उसमें फँस गया था।

Scanned with CamScanner